आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:15-09-14

सारी सृष्टि चक्र के कल्पवृक्ष के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देकर, हमें मास्टर ज्ञान-सागर बनाने वाले, ज्ञान-सूर्य बाप ने कहा, मीठे बच्चे - ज्ञान का तीसरा नेत्र सदा खुला रहे तो खुशी में रोमांच खड़े हो जायेंगे, खुशी का पारा सदा चढ़ा रहेगा.

बाबा ने हम बच्चों को तीन मुख्य बातों का ज्ञान दिया हैं - आत्मा, परमात्मा और सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान. जब हम पहेली बार इस ज्ञान को सुनते है तो हमारी आत्मा में लाइट आ जाती हैं. बाबा से हमें दिव्य बुद्धि का वरदान प्राप्त होता हैं और हमारी बुद्धि का ताला खुल जाता हैं. अब हमारी बुद्धि सही (ज्ञान) और गलत (भक्ति) के अंतर को समझ सकती हैं. आज बाबा ने कहा बुद्धि का ताला खुलने को ही ज्ञान का तीसरा नेत्र खुला कहते हैं. अब हमारी आत्मा को स्वयं का, परमात्मा का और सारी सृष्टि चक्र के कल्पवृक्ष का सच्चा ज्ञान मिलने से आत्मा को इतनी सारी प्राप्ति होती है जिसे की आत्मा तृप्त हो जाती है. तृप्त आत्मा ही ईश्वर से योग लगाकर अतीन्द्रिय सुख को प्राप्त करती है तो आत्मा खुशी से झूम उठती है. हमारी आत्मा इस ज्ञान का विचार-सागर-मंथन करती है और इसमें से ज्ञान-रत्न निकालती है और उसे धारण करती है तो आत्मा की खुशी और बढ़ती जाती है जिसे ही आज बाबा ने कहा खुशी से रोमांच खड़े हो जाते है और ऐसी आत्मा का खुशी का पारा सदा के लिए चढ़ा रहता है.

आज बाबा ने सारी मुरली में हमें गोले के, कल्पवृक्ष के और त्रिमूर्ति के चित्र को युज कर, सारी सृष्टि चक्र के ज्ञान को अच्छी तरह समझकर औरों को भी समझाने को कहा हैं. मनुष्यों की बुद्धि में यह ईश्वरीय नॉलेज सहज रूप से बैठाने के लिए ही बाबा हमें चित्रों को युज करने को कहते हैं. चित्रों से मनुष्य जल्दी ही समझ लेंगे. बाबा ने कहा है की स्वर्ग में आने के लिए मनुष्य आत्मा को यह ज्ञान को सुनना जरूरी है जब तब यह ईश्वरीय ज्ञान मनुष्य आत्मा सूने नहीं तब तक उसको बाप से जीवनमुक्ति का वर्सा मिल न सके, यानी आत्मा जीवन-बन्ध से जीवन-मुक्ति में जा न सके. इसलिए जितनी भी आत्माओं का सतयुग में पार्ट है, उसे इस समय यह ज्ञान मिलना जरूरी हैं.

बाबा ने आज हमें यह भी कहा की यह साइन्स तुम्हें बहुत-बहुत मदद करेंगी तो हम देखते है की आज साइन्स की मदद से यह ज्ञान सारे संसार को मील रहा हैं.

बाबा ने आज की मुरली में भक्ति मार्ग की दो बातों का राज भी समझाया हैं, जिसे हमें भक्तों को समझाने में मदद मिल सकती हैं.

१. भगवान को ज्ञान-सागर (नॉलेजफूल) क्यों कहा जाता हैं? क्योंकि भगवान की आत्मा में ही इस सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान हैं. हम भाग्यशाली ब्राह्मणों को यह नॉलेज इस संगम के समय पर, उस बेहद के बाप (परमात्मा या भगवान) से प्राप्त होता हैं. जब हमारी आत्मा यह शरीर छोड़कर परमधाम जाती है तो यह नॉलेज निकल जाता हैं. एक बाप की आत्मा में ही सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का नॉलेज सदा रहता है (संगम के समय पर ईमर्ज होता है). इसलिए ही बाप को ज्ञान-सागर कहा जाता हैं.

२. भगवान हमारे मात-पिता कैसे बनते है? बाप में सारा ज्ञान तो है लेकिन उसे हम जीवात्माओं को सुनाने के लिए ब्रह्मा के तन का सहारा लेना पड़ता हैं. जब वह परमात्मा ब्रह्मा के तन में आते है और हम बच्चों को एड़प्ट करते है तो हम बच्चे, ब्रह्मा-मुखवंशावली ब्राह्मण कहलाते हैं. तो वह बेहद का शिव बाप, ब्रह्मा के मुख (एक ही शरीर, दो आत्माये) द्वारा ज्ञान सुनाकर हम ब्रह्मा-मुखवंशावली ब्राह्मणों को पैदा करते हैं. इसलिए शिव हमारा पिता है और ब्रह्मा हमारी माता हैं. भगवान के इस कर्तव्य के आधार पर ही भगवान को मात-पिता कह कर पुकारते हैं.

ॐ शांति.